[illegible]

॥ ई ॐ श्रीः ॥

नेपाल के श्रीपशुपतिनाथजीके तात्त्विक स्वरूपके बारेमें आपलोग बहोत कुछ सुन चुके ही होंगे, लेकिन वहांकी ओर भी कुछ ऐसी बातें सुनानेकी बाकी हैं, जो कि और कहीं भी नहीं पा सकेंगे, उनमें वहांकी पूजा पध्दति एक विशिष्ट प्रकारकी है, असके अनुसन्धानके लिये हर सोमवार पशुपतिका दर्शन, करनेको और पूजा देखनेका नियम रख लिया था,

पहिले तो रुद्राभिषेक वगैरह होता है, जैसा ओर सभी जगहपर होता है, उसमें कुछ भी फरक नहीं, उसके बाद पशुपतिके सिरमें सफेद चन्दनसे रोज श्रीयन्त्र लिखकर श्रीयन्त्रार्चन-पध्दतिके अनुसार पूजा किई जाती है, वह प्रायः शङ्कराचार्यजीसे ही सुरु किई गई है, और सभी शक्तिपीठोंमें - स्फटिक शालिग्राम, सोना, चान्दी, तांबा आदि पत्थर और धातुओंके पत्रेमें श्रीयन्त्र कोरके लिखवाकर पूजामें रखा गया है,

लेकिन - इस प्रकार रोज यन्त्र लिखकर पूजाकरनेकी पध्दति और कहीं भी नहीं, वह भी शिवजीके सिरपर, वह श्रीयन्त्र तो पराशक्तिरूपी त्रिपुरसुन्दरीकी तात्त्विक रूपकी प्रतिमा मानीगई है,

" श्रीमद् भारत मातृमूर्ध विलसन्नेपाल हैमालये
सत्यात्मा परमेश्वरः "पशुपतिः" पूर्णामृतखेश्वरः ॥
श्रीमाता त्रिपुराम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी
श्रीयन्त्रे परदेवता "पशुपते" मूर्ध्नि स्वयं राजते ॥

"श्रीमद् भारत मातृ मूर्ध विलसन्नेपाल हैमालये
सत्यात्मा परमेश्वरः "पशुपतिः" पूर्णामृतक्षेश्वरः ॥
श्रीमाता त्रिपुराम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी
श्रीयन्त्रे परदेवता "पशुपते" मूर्ध्नि स्वयं राजते ॥

इसमें क्या रहस्य होगा, इस बातकी तलास करते र[illegible]पता लगा कि – स्थापित स्फटिकादि यन्त्रों से भी रोज लिखने की प्रक्रिया में ही कुछ विशेषता है, वह एक परम योगका स्वरूप है, और एक विशिष्ट प्रकारकी आराधना उपासनारूपी तपस्या भी है, उसमें देवताके "मन्त्र यन्त्र और तन्त्र" इन तीनों तात्त्विक वस्तुओंका सामञ्जस्य सत्त्व है, एक ही कामसे तीनो वस्तुओंका योग एक साथ सिध्द होता है, वह योग ज्ञान भावना और कृतिका है। और मन्त्र यन्त्र और तन्त्रोंका भी, मन्त्रोंके बीजरूपी अक्षर, और अर्थका ज्ञान, और देवताओंके विग्रहरूपी यन्त्रका – तात्त्विक दिव्य भाव, और लेखन पूजा आदिरूपसे एकसाथ करनेकी तन्त्ररूपी क्रिया, तथा उसकी प्रक्रिया इनतीनोंका योग एकही काममें सिध्द होजाता है। इसी तत्त्वसे प्राचीन कालमें प्रारम्भ किई गई वह पूजाकी पध्दति आजतक अविच्छिन्न चल रही है। जैसे जपसे मन्त्रकी सिध्दि होती है, उसीतरह लेखनसे मन्त्रकी।

शिवजीके सिर पर शक्तिका श्रीयन्त्र लिखने में भी और एक रहस्य है. वह शिव और शक्तिका सामरस्य, वह स्वतः सिध्द होनेपर भी गुप्त होनेके कारण इस श्रीयन्त्रसे प्रत्यक्ष दिखाई देती है. उस यन्त्रमें नौ चक्र हैं, बीचमें जो पूर्ण बिन्दु है, वह शिव और शक्तिका निराकार और पूर्ण निर्विकार रूप है, त्रिकोण त्रिशक्तिका स्वरूप है. आठ दल - अष्टसिध्दि - और अष्टमातृकाओंका है, दो दशार चक्र दस प्राण और दस दिशाओंका रूपक है, १४ दल - बाहेरके चौदह भुवनोंका है, भीतरके १४ इन्द्रियोंका रूप है, फिर आठ दल आठ दिशाओंका है. १६ दल सोलह कलाओंका है जो कि पूर्ण कला मानी गई है. तीन वृत्त तीन गुणोंका रूप है. भूपुर यह मन्दिरका रूप है, जिसमें चार दर्वाजे होते हैं; उसमें वह वज्रादि आठ आयुधोंके सहित इन्द्रादि आठ दिक्पालोंका स्थान माना गया है, इन नौ चक्रोंके अलग २ नाम हैं, और उनके आवरण देवता रूपी नौ शक्तियां भी अलग हैं, यह श्रीयन्त्र शक्ति और शिवको विश्वरूपतत्त्वका प्रतीक है,

हरएक पूर्णिमाके रोज एक विशेष पूजा होती है, उसका नाम है महास्नान, वह नित्यपूजाके बाद दिनमें ४ बजे प्रारम्भ होकर रातके नौ बजे समाप्त होती है, उसमें २५-२५ घड़े दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर इन पञ्चामृतोंसे अभिषेक किया जाता है, आखेर महा भोग भी लगाया जाता है, वह अन्नकोटकी तरह अनेक प्रकारके मिठाई आदि पक्वान्नोंसे अन्नपूर्णा भरी हुई रहती है. वह अन्न पीछे गरीब लोगोंको बांटा जाता है. वह पूजा भी देखने लायक होती है, वह श्री ५ सरकारके तरफसे करनेका प्रबन्ध किया गया है,

[illegible]

शिवरात्रीकी तरह हर साल पौषकृष्णा चतुर्दशी के रोज और एक महा-
यात्रा होती है, उसका नाम बाला चतुर्दशी, उसमें ज्यादा करके
दूर दूर के पहाड़ के लोग ही आते हैं, उस रोज पितरों के उध्दार के
द्वारा आपने कल्याण के लिये प्रायः सभी लोग अलग अलग दीप
लगाकर सायंकाल ६ बजे से प्रारम्भ करके सुबह तक ज्योतिः स्वरूपी
रुद्र भगवान की आराधना उस दीप के स्वरूप में करते हैं, पशुपति के
चारो ओर, और पास के कैलास के उपर कई हजारो लोग बैठे रहते हैं,
रात भर गीत भजन नाच वगैरह करते हुए बड़े आनन्द से समय
बिताते हैं, वह दृश्य दूर से देखने से मालुम होता है कि - छोटे बड़े
अनगिनती नक्षत्रों से भरा हुआ आकाश ही महान जीक आकर
जमीन पर बैठ गया है कि जैसा लगता है,
कभी कभी उस समय में रात भर बारीस भी हो जाती है, ~~लेकिन~~-
पर भी वे लोग उस कष्ट को सहन करते हुआ बैठे रहते हैं, वह दृश्य भी
बड़ा विचित्र ही रहता है,
पशुपति के सन्निधि में और एक महा यात्रा रोज होती है, जिसका

बड़ा विचित्र ही रहता है,

पशुपति के सन्निधि में और एक महा यात्रा रोज होती है, जिसका नाम है "श्मशानयात्रा, वह भी इतर सभी जगह से वहां की ही कुछ कुछ विलक्षण और देखने लायक रहती है, सुनिये उसकी एक विचित्र कथा सुनाता हूं, प्रायः वहां के सभी लोग घरबार धन दौलत आदि की माया मोह आशा पाश आदि छोड़कर आखेर के समय ४ दिन ईश्वर आराधना से आनन्द पूर्वक बिताने के लिये, और परलोक की सद्गति प्राप्त कर लेने के लिये, वैसे निश्चिन्तता से मरने के लिये ८ दिन, १५, दिन, या महिने से पहिले ही पशुपति के पास पहुंच जाते है, "येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां पशुपतिर्गतिः" जिनको कहीं भी कुछ गति नहीं उनको पशुपति ही गति है. इस वचन का वह एक प्रत्यक्ष आदर्श है। सचमुच सभी लोगों के मनमें वही भाव रहता है, वे लोग वहीं रहकर जपपूजा पाठ आदि स्वयं से यथाशक्ति आराधना करते हुए और ब्राह्मण द्वारा कराते हुए, और गीता भागवत आदि धर्मग्रन्थों का श्रवण करते हुए, अन्तकाल की प्रतीक्षा करते रहते हैं, कोई कोई लोग २-३ महिने तक वहीं रहकर उस ईश्वरीय आराधना से आराम होकर अपने घर चले भी जाते हैं, आखेर में फिर वहीं आ जाते हैं, सरकार से वहां अनेक धार्मिक वैद्य भी रखें गये हैं. वंशपरम्परा से और छोटे उमर से ही उसी काम में वे लोग तैयार हो गये हैं नाड़ी देखकर मरण का समय ठीक बता देते हैं. उस अन्त समय में पशुपति का चरण तीर्थ गिरने के स्थान पर, वाग्मती के किनारे पर, रखे हुए शिला के श्रेष्ठ नाल पर उनको सुलाकर विद्वान ब्राह्मणों के मुखसे

उनको औषधोपचार भी किया जाता है।

मंत्रका उच्चार करकेही प्राण निकलजाता है,
२+ बल्कि इधर उधर देश विदेश गया हुए लोग मरते वक्त अपने घर जाने की कोशिस करते हैं, और घर पहुँच भी जाते हैं, ठीक उसका विपरीत यहां देखने में आता है ४

तारक मंत्रका उपदेश दिलाते हैं, जिस मंत्रको स्वयं शिवजी अहर्निश जपते रहते हैं. उस तारक मंत्रका "श्रीराम श्रीराम" ऐसे निकलते हुए दिव्य ध्वनि (सुनकर) वह मरनेवाला पुरा भी जग जाता है. और कोई २ लोग उस मंत्रका उच्चार पूर्वक जप भी करता रहता है, +

काशी में मरनेवालों को विश्वनाथ जी तारक मंत्रका उपदेश देते हैं, ऐसे पुराण में लिखी गई बात वहां नेपाल में प्रत्यक्ष देखने में आती है, अर्थात उसीका रहस्य वहां रहता है, उसी भावका अनुकरण किया जाता है, उस वक्त परलोक में जानेवालों को दर्शन के लिये कुछ मित्र आदि अनेक लोग वहां जुट जाते हैं, उस वक्त मालुम होता है कि- जैसे अपने घर में आए हुए किसी पाहुना को फिरता भेजने के लिये गाम के बाहेर नदी की सीमा तक पहुँचाने के लिये कुछ मित्र लोग आते हैं, ठीक उसीतरह सब लोग प्रेमसे आते हैं, विचार करने से सचमुच वह ४ दिनोंका अतिथि ही रहा. ~~इस तरह की~~ कई बार मुझे भी उसमें भाग लेनेका सौभाग्य मिला था. उस तरह की स्मशान यात्राको मैंने और कहीं भी नहीं देखा था, न तो सुना था, वह पद्धति और कहीं भी नहीं, ~~ऐसे करनेका अतिशयोक्ति नहीं~~ + बाद उसीके नजीक ~~चिता~~ बनाए हुए ~~चबूतरे~~ पर चिता बनाकर उसको अन्त्येष्टि ~~यज्ञ~~ किया जाता है, वह देखकर मुझे भी इसीतरह मरनेका सुयोग मिलता तो मेरा भी जन्म सार्थक होता था ऐसा मुझे लगा, उसीतरह सब लोगों के मनमें भी सद्भावना हुई बिगर नहीं ~~रहेगा~~ रहेगा,

नेपाल में अपने घरमें मरने वालों को अभागी और दोषी समझते हैं, पशुपति के पास मरना ही सौभाग्य माना जाता है, सचमुच वही शास्त्रीय ~~नहीं~~, है,

इसीतरह नेपाल के लोग इसी अपनी प्राचीन धार्मिक संस्कृतिको

... है।

सचमुच नही शास्त्रीय ~~नही~~, है।

इसी तरह नेपाल के लोग इसी अपनी प्राचीन धार्मिक संस्कृति को
कायम रखते हुए जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन ~~आदि~~ संस्कारों से अन्त्येष्टि तक के सभी, और भी सभी
धार्मिक कार्यों में तत्पर रहते हैं। वे लोग और देश में जाने पर भी
अपनी पद्धति नही छोड़ते हैं, उनको इसी तरह की अन्त्येष्टि कार्य में भी
किई जाती है। वे लोग मरने के लिये मणिकर्णिका घाट पर
पहुँच जाते हैं। और वहां भी इसी तरह सब क्रिया करते हैं।
वह भी काशी बड़े गुरुओं तथा राज पंडित जी की स्वर्गारोहण महा
यात्रा काशी मणिकर्णिका के तट पर प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य
मुझे मिला था। यह भी एक बात सारे दुनिया से भी नेपाल की ही
विलक्षण है। वैसा मरना ही बड़ा भाग्य है। जिसके भाग्य में है

प्रायः महाराजा से लेके प्रायः सभी लोग — जातकर्म अन्नप्राशन व्रतबन्ध
आदि ~~वैदिक~~ संस्कार से प्रारम्भ करके अन्त्येष्टि तक के सभी संस्कार
~~अपने को~~ आस्तिक कहलाने वाले भी करते हैं।
मन्त्रदीक्षा· जप, कर्मानुष्ठान
व्रत नियम होम हवन पूजापाठ — भक्ति· उपासना।

और वे लोग —

उन्हीको वैसा मंगलमय मरण मिल सकता है. वही मुक्त पुरुष है.
(वह वैसो स्मरण नयाना स्त्रीपुरुष आदि सभी लोगोंको समान ही किई जाती है।)

नेपाल में भगवती गुह्येश्वरी

श्री पशुपतिके नजीक १ पैला दूर पर एक शक्ति पीठ है, जिसका नाम है गुह्येश्वरी. वह स्थान भी अति विचित्र और परम पवित्र है, वह शक्तिका एक जागृत स्थान है, वह दर्शनके वास्ते सभी लोगोंके लिए खुला है. वैसा प्रत्यक्ष होने पर भी उसका स्वरूप गुप्त ही है पशुपतिकी तरह वहां कुछ मूर्ति लिंग आदि कुछ भी प्रतिमा नहीं हैं, गुह्येश्वरीके ऊपर मंदिर भी बान्धा हुआ नहीं है,
वाग्मती नदीके किनारे पर एक जङ्गलके भीतर जमीनमें दो रुप्य घेराईका एक छिद्र है, उसमें सदा जल भरा हुआ रहता है, वह किसी समय में भी न घटता है, न तो बढ़ता है. (अर्थात् बरसातमें और गर्मीमें भी पानीका घटी बढ़ी नहीं होती है) उबालता हुआ दूध, जैसी नकुरके ऊपर निकलता हुआ पानीकी तरह सदा आवाज करता हुआ जल ऊपर नीचे आता जाता रहता है. अपनी पीठकी मर्यादाको छोडकर बाहर नहीं बहता है. अभिषेकके रूपसे पानी दूध वगैरह जितना भी चढ़ाया जाय वह सब भीतर समाय जाता है. पूरा खाली भी नहीं होता है, उसमें केला मिठाई और भी फल फूल जो कुछ चढ़ाये जाते है वे सब नीचे भीतर चले जाते है. और बार बार जलके साथ ऊपर आता जाता रहता है. आठ दिनोंके बाद भी मिलता है वह उसको प्रसाद रूपसे लेते भी है,
उसमें कभी कभी सजीव मछली भी निकलती है,
कालिका पुराण में इस स्थानके बारेमें उल्लेख किया गया है कि—
"इदं देव्या रहः स्थानं पुराणं सर्वसिद्धिदम्।
सतीगुह्यनिपातेन ततोऽपि श्रेष्ठतां गतम् प:
देवीका यह पुरातन गुह्य स्थान सब सिद्धि देनेवाला है. इसमें सतीकी गुह्य इन्द्रिय गिरनेके कारण वह उससे भी श्रेष्ठ बन गया है.
इस स्थान[...] अर्थात गुह्येश्वरीके अनुसन्धानसे मैंने गुह्येश्वरी [...] नामका एक ग्रन्थ बनाया है, उसमें संस्कृत श्लोक, और नेपाली भाषा टीका भी है।

इसमें भी ... अर्थ छिपा हुआ है

वस्तुतः ... तात्विक ही होना उचित है, जो कि आमोनिज

भावियों के उदय में कारण माना गया है,

इस ब्रह्माण्ड में बाह्य दृष्टि से सभी प्रजाओं का उत्पादक और अधिपति

यह सूर्य ही है। वह वेद में दक्ष माना गया है,

"अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि" अदिति से दक्ष पैदा हुआ है दक्ष से

अदिति, वह दक्ष आदित्य ही है। "दक्ष आदित्यो भवति" निरुक्त

उस आदित्य के किरणों ... वृष्टि के द्वारा सब जीवराशि इस पृथिवी में

पैदा होते हैं, यह प्रत्यक्ष सिद्ध है, इतर प्राणियों की तरह मनुष्यों को भी

पैदा कर। आदिसृष्टि में इस पृथिवी से ही हुआ है,

सावर्णिः सूर्यतनयः- सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः-

इत्यादि वचनों से मनु वसिष्ठ अगस्त्य- आदि पुरुष। पार्वती सीता, द्रौपदी

आदि स्त्रियों भी अयोनिज माने गये हैं। संघर्षण,

चन्द्रमा से आदित्य में (तेजस) रस का आकर्षण, आदित्य से (उस) विद्युत में, उस विद्युत से

(वर्षण इन तीन प्रकार से)

वृष्टि के द्वारा पृथिवी में- अन्न के रूप से जीव का उदय होता है। वह अन्न

(जीव का)

पुरुषों में वीर्य के रूप से बीज बनता है वह वीर्य स्त्रियों के गर्भाशय

में सशरीर पुरुष व्यक्ति के रूप से पैदा होता है

इस तरह सर्व साधारण जीवों की उत्पत्ति की प्रक्रिया है जैसे मेंढक आदि जन्तु-

उसमें पृथिवी से ही पैदा होने वाले को अयोनिज माने गये हैं।

यही तत्त्व सभी अयोनिजों के जन्म आविर्भाव में समान है,

उसी न्याय यहाँ पर पार्वती के जन्म में भी + दक्ष-

(अद्रिः)

वेद में पर्वत गिरि हिम आदि नाम। वेद में मेघ के हैं।

यह वैदिक निघण्टु में प्रसिद्ध है. (अद्रिः ग्रावा)

आदित्य रूपी दक्ष से मेघ के द्वारा इस पृथिवी में भी हिमवत् पर्वत में

जलाशय में पैदा होने के कारण उसको पार्वती + गिरिजा हैमवती

इत्यादि नाम पड़े हैं। जैसे सीता को भूमिजा - वस्तुतः सीता नाम (वेद में) भासक ही है।

इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु। सीते वंदामहे त्वा। इत्यादि।

उस सीता का जन्मस्थान जनकपुर के पास सीतामढ़ी नामक गांव में एक

छोटा सा तालाब है प्रसिद्ध है।

उसी तरह यह गुह्येश्वरी का स्थान पार्वती का जन्मस्थान होने के कारण

मानना उचित है- "सती गुह्य निपातेन" वह सती का गुह्य माने-

(सूक्ष्म)

उस सती के प्रादुर्भाव में कारणीभूत वह गुह्य बीज इस स्थान में

गिरने के कारण उस स्थान को गुह्येश्वरी नाम पड़ा है।

यही वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मेरा निश्चित रहस्य अर्थ है आप लोगों को

भी सुनाता हूं- जिसके भाग्य में हो वे एक बार जरूर ही दर्शन करेंगे।

उसमें वेद शास्त्र और पुराणादि वचन के प्रमाण से अनुसन्धान
पूर्वक विचार किया गया है — उसका सारांश यह है कि —
दक्षप्रजापति के यज्ञकुण्ड में उसकी लड़की सती दाक्षायणी ने
अपना शरीर जो समर्पण किया था, उसको शङ्कर जी अपने कन्धे पर
उठाकर जब चलने लगे, तब उसके इन्द्रिय जो गिर गये थे,
वे सब एक एक शक्तिपीठ बन गये हैं, उनमें से यह गुह्य इन्द्रिय है।
कामगिरि में कामाक्षा योनि स्थान होने के कारण यह भी योनि
स्थान माना नहीं जा सकता, अतः सती के सभी स्थूल इन्द्रिय
गिर जाने के बाद तो बीजरूपी सूक्ष्म लिङ्ग शरीर था, वह इस स्थान में गिरा,
उसी से वह सती इसी स्थान से पार्वती के रूप से फिर पैदा हुई हैं।
उसी से वह अयोनिजा पर्वतराज की कुमारी पार्वती मानी गई हैं।
यहां की पूजा भी और समीज यह से उल्टी है। देवी के सभी पूजादि उपचार
बायें हात से ही किया जाता है। इसी से वह वामाचार माना गया है।
शक्ति स्वयं वामा होने के कारण, पूजा करने वाला भी तद्रूप बनकर
अपने भी मांगरूपी बायें हात से ही पूजा करनी चाहिये।
वही उचित भी है।
और एक विशेषता यह है कि — उस गुह्येश्वरी के कुण्ड के ऊपर ढकने के लिये
एक नवरत्न का मुकुट रखा जाता है, उसके ऊपर त्रिकोण यंत्र
लिखा गया है, वही ज्ञान इच्छा और क्रियारूप त्रिशक्ति का
प्रतीक है। और एक स्फटिक का कलश भी है। वह पूजा के समय
गुह्येश्वरी के पास रखा जाता है। उसके ऊपर त्रिकोण और
उस त्रिकोण के बाहर चार दलों का कमल भी लिखा हुआ है,
वह पशुपति के चार मुखों के तान्त्रिक स्वरूप का चिन्ह है। बीच का
पूर्ण बिन्दु ही पांचवा मुख है। यहां भी शिव शक्ति यों के योग से ही
पूजा करने के लिये शिवस्वरूपी स्फटिक कलश रखा गया है।
इस शक्तिपीठ में अर्थात सारे नेपाल में प्रायः सभी स्त्रियों को
तान्त्रिक शाक्त मन्त्र के उपदेश से दीक्षा दिई जाती है, वे स्त्रियां भी
शास्त्र विधि के अनुसार उस मंत्र का न्यास ध्यान आदि विधिपूर्वक जप
पुरश्चरण आदि किया करती हैं, तंत्रशास्त्र में कहा गया है कि —
शक्तिमंत्र से दीक्षित स्त्रियां साक्षात भगवती की ही स्वरूप बन जाती हैं।
वे ही शक्तिपूजा के योग्य मानी गई है।
वस्तुतः स्त्री जाति ही भगवती की प्रत्यक्ष मूर्ति है। विद्याः स्त्रियः समस्ताः
इसीलिये नवरात्री में स्त्रियों को पूजा किई जाती है।
वही सजीव बोलने चालने वाली चर देवतारूपी साक्षाद् भगवती की

पर्वतः

वेदमें और वैदिकनिघण्टु में अद्रिः, गिरिः हिमः वगैरह नाम प्रसिद्ध मेघके हैं।
आदित्यके तेजसे मेघका जो सम्बन्ध हुआ वही जल का संयोग है।
उस जल के साथ मिला हुआ इस पृथिवी के हिमवत् पर्वत में जो उसका
जो सम्बन्ध हुआ वही पृथिवी का संयोग है। उस हिमवत् पर्वत रूपी पृथिवी से
पैदा होने के कारण उसको पार्वती गिरिजा हैमवती इत्यादि नाम पड़े हैं।

~~सबलोग~~ बन गये थे सबलोग व्रतस्थ रहते हैं। ~~जिसमें~~ उपवास आदि नियमसे ~~रखे जाते हैं~~!
उस धुनमें सबलोग खाना पीना आदि सभी विषयको भूल गये थे -

"श्रीपूर्णे भारतेऽस्मिन् सकलरसयुते भूशिरःस्थानभूते
शश्वच्छान्त्यादिकेन्द्रे हिमगिरिशिखरेऽप्युत्तरेऽसुत्तमे स्वे ॥
पुण्ये नैसर्गरम्ये परगहनवने साद्विचित्रे पवित्रे
क्षेत्रे नेपालसंज्ञे लसति पशुपतिः पार्वतीशः परेशः ५

2

उस शिवरात्रिके दिन वहां लाखो यात्रिक लोग जुटे हुए थे, उस रोज २४ घण्टा ~~सतदिन~~ अहोरात्र दर्शनके लिये पशुपतिकी चारो दरवाजे खुली थी, दिनमें जगह जगह पर साधु सन्त महात्मा आदि विद्वान लोगोंका भक्ति ज्ञान उपासना आदि समयोचित विषयपर आख्यान होता था, रातभर आठो प्रहर तक एक एक प्रहरमें ~~एक एक~~ अलग अलग महापूजा होती थी, सैकडो वैदिक विद्वान ब्राह्मणोंके मुखोंसे निकलता हुआ रुद्री आदि वेद मन्त्रोंका घोष भी सुननेमें आता था, संस्कृत कविताके महिम्न आदि स्तोत्रोंपाठ, हिन्दी नेपाली पहाडी, महाराष्ट्र तामिल आदि अनेक भाषाओंके स्तोत्र गीत भजन सङ्कीर्तन, के सहित डमरु ढोलकी बाजा आदि वाद्योंके दिव्य ध्वनिके नाद ब्रह्ममें लगे हुए, और नृत्य प्रदक्षिणा आदि रूपसे आराधना करते हुए सब लोग रातभर जागते रहे थे, हजारो लोगोंके मुखोंसे एक साथ निकलता हुआ "पशुपतिनाथकी जय "पशुपतिनाथकी जय" ऐसा अखण्ड जयजयकारकी धून दिनरात लगातार चल रही थी, वह सुनते देखते करते नाचते सबलोग शिव शक्तिके भक्ति-रसके ~~भरमें~~ ~~आ~~ परमानन्दके भरमें मगन हो गये थे, मुझे भी सिध्देश्वरके सान्निध्यमें रहकर उसमें भाग लेनेका सौभाग्य मिला, उस वक्त मालुम हुआ कि - हम कैलास पर पहुँच गएं हैं। सच मुच वह एक भूकैलास ही है, वह दृश्य एक अलौकिक और अतिविचित्र दर्शनीय था, उसको याद करनेसे और सुननेसे अभी भी सामने प्रत्यक्ष दीख रहा है कि जैसा लगता है।
वह आनन्द रस चाखना चाहते हो तो आप लोग भी एकबार वहां जानेसे ~~१~~ मेरी बातोंका प्रत्यक्ष दर्शन हो सकता है। जिनके भाग्यमें हो वे अवश्य ही दर्शन करेंगे, अपने पैर नयन कान पवित्र कर लेंगे, और अपनी सारी जीवन यात्रा भी

सिध्देश्वरके सान्निध्यमें उसमें भागलेनेका सौभाग्य मिला,
उसवक्त मालुम हुआ कि – हम कैलास पर पहुँच गएं हैं. सच
मुच वह एक भूकैलाश ही है, वह दृश्य एक अलौकिक और
अतिविचित्र दर्शनीय था, उसको याद करनेसे और सुननेसे
अभी भी सामने प्रत्यक्ष दीख रहा है कि जैसा लगता है,
वह आनन्द रस चारवना चाहते हो तो आप लोग भी एकबार
वहां जानेसे इन मेरी बातोंका प्रत्यक्ष दर्शन हो सकता है,
जिनके भाग्य में हो वे अवश्य ही दर्शन करेंगे, अपने पैर
नयन कान पवित्र करलेंगे, और अपनी सारी जीवन यात्रा भी
सफल करलेंगे,

वह वैसे यात्रा हरसाल वहां होती है, बडे बडे साधु सन्त सन्यासी महात्मा
योगी, अमीरगरीब आदि सभी प्रकारके लाखों लोग एकही
जगह पर जम जाते हैं, उन यात्रिक लोगोंके लिये सह ~~खानपान~~

८ दिनोंतक रहनेका खानपानका और धुनि ता...
औषधोपचारका भी प्रबन्ध श्री ३ सरकारके तर...
किया जाता है, और शान्तता रक्षणके ~~लिये~~ द्वारा य...
सेवा करनेको भी योग्य व्यवस्था किई जाती है, (वह प्रत्यक्ष
देखनेके लिये श्री ५ सरकार महाराजाधिराज, श्री ३ सरकार महाराज
साहेब, श्री मिनिस्टर कमाण्डर इन चीफ साहेब, और श्री राजगुरु
धर्माधिकारी वगैरह सभी अधिकारी लोग आते हैं, और ४
परम श्रद्धाके साथ साधु महात्मा आदि यात्रिकोंका दर्शन सेवा और
सत्कार भी करते हैं,) वहांसे लौटते वक्त उन यात्रिक लोगोंको
रास्ता खर्चाके लिये बिदागी भी सरकारसे मिलती है,
(यह नेपाल हिन्दू धर्म राज्यकी एक बडी भारी सौभाग्यकी
बात है.)
शिवरात्रीकी यात्रा समाप्त होनेके बाद भी प्रत्येक [illegible]

(यह नेपाल हिन्दू धर्म राज्य को एक बड़ी भारी सौभाग्य की बात है।)

शिवरात्री की यात्रा समाप्त होने के बाद भी मुझे कुछ दिनों तक वहीं रहने की इच्छा हुई, और सरकार से इजाजत भी मिल गई, बाद पशुपति के बारे में कुछ संशोधन करने की भी लालसा भी पैदा हुई। पशुपति के आविर्भाव के बारे में हिमवत् खण्ड में लिखी हुई एक विचित्र बात पहिले सुनाइं - सुनिये, नेपाल शहर से ध कोस दूर के पहाड से रोज सुबह एक कामधेनु गौ वहां आती थी, वह वाग्मती नदी में नहा कर उस खुली जमीन पर दूध छोडकर चली जाती थी, जहां पर हाल पशुपतिनाथ जी है, वह देखकर निधि की शंका से वहां के लोगों ने वह जमीन खोदा, तब उसके अन्दर से एक ऐसी दिव्य ज्योति की चीज निकल पड़ी कि - उसको देख भी न सके, उसको देवता का स्वरूप समझ कर पत्थर से ढाक दिया, बाद में उसके ऊपर इस पशुपति की मूर्ति का स्थापन किया, पीछे मन्दिर भी बान्धा गया,

"हिमालये तु केदारम्" हिमालय में बसे हुए केदारनाथ जी के विग्रह में पैर से नाभि तक का भाग मात्र है, और नेपाल के पशुपति में वह नीचे का भाग नहीं, किन्तु उपर का भाग मात्र हैं, अतः यह केदारनाथ का शिरो भाग माना गया है, इसी लिये पशुपति के दर्शन से ही केदार यात्रा पूर्ण होती है, वह बारह ज्योतिर्लिंगो में से एक है, और चार धामों में उत्तर धाम है।

का ध्यान तो केवल लिंग में ही हो सकता है।

प्रश्न :- परन्तु यहां इसी लिंग में मुख क्यों रखा गया होगा-

उत्तर :- इसका विचार करते करते वेद में पता लगा कि वे पंचवक्त्र रूपी पंच प्राणात्मक हैं।

रुद्री में पशूनां पतये नमः - नमः शर्वाय च पशुपतये च इन मंत्रों में पशुपति का नाम है। वह रुद्र भगवान का ही है।

~~दस प्राण और आत्मा इस ग्यारह रुद्र~~

ग्यारहवां रुद्र रूपी आत्मा के दस प्राण रूपी किरणें प्राति के ~~...~~ पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर और ऊर्ध्व इन पांचों दिशाओं में फैली हुई हैं।

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषां अन्नमिषवः तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमः ।

इसी से पंच मुखों की कल्पना की गई है। ऊर्ध्व मुख सबके ऊपर ही होने के कारण वह लिंग रूप ही रखा गया है।

उनका पांच प्राणों के नाम प्रसिद्ध हैं (प्राणादि) ५-

अष्ट मूर्ति स्वरूप :-

~~कहां~~ यहां इसी लिंग में क्यों मुख रखे गये हैं मे वे भी चार और चार ऐसा विचार करते २ पता लगा कि-

पाशुपत मत में "पशु पाश और पति" ये तीन पदार्थ ही माने गये हैं। ब्रह्मादि- स्थावरान्त सब जीवराशि ही पशु हैं, इनको काम मोह अज्ञान और मरण आदि विषय ही पाश है, उस पाश से छुड़ाने वाला सर्व- विद्याधाम परमेश्वर ही पशुपति है, यह सामान्यतः व्यापक ~~अर्थ~~ है स्वरूप है,

प्रायः सभी जगह पर शङ्कर जी का विग्रह केवल लिङ्ग रूप ही ~~रहता~~ है, वह हात पैर मुंह आदि अङ्गों से रहित सूक्ष्म लिङ्ग शरीर का और उसकी अन्तरात्मा की संकेतिक प्रतिमा है, उन सभी से यह पशुपति कुछ विलक्षण है, इसके एक ही लिङ्गाकार विग्रह में पूर्व दक्षिण पश्चिम और उत्तर" इन चारों दिशाओं में चार मुख हैं, उनका स्वरूप अलग २ प्रकार का है, प्रत्येक मुख के सम्बन्ध से दो दो हात हैं। दाहिने हात में जपमाला, बायें में कमण्डलु है, पांचवा ऊपर का मस्तक रूपी मुख केवल लिङ्ग रूप है, जैसा और सभी जगह पर है।

उदयपुरमें भी इसी प्रकारकी मूर्ति है ऐसे सुननेमें आता है। उसके
बारेमें एकबार नेपालके सिंहदरबारमें श्री ३ राजर्षि महाराजजीकी
सभामें चर्चा हुई थी, मुझसे पूछा भी गया था, मैंने उसका एक
निर्णयका जबाब भी दिया था कि नेपालमें पशुपतिका आविर्भाव
हुआ है, यह इत बात का उल्लेख हिमवत् खण्डमें ~~किया गया~~ है, उदयपुरका तो किसी
पुराणमें भी नहीं, अतः वह इसीका स्मारकरूपसे पीछे स्थापित
किया गया है। ऐसे ही मानना उचित है,

कुछ दिनोंके बाद पशुपतिके बारेमें कुछ शास्त्रीय तत्वका संशो-
धन करनेमें मेरा विचार जगा, मैंने वेद शास्त्रादि ग्रन्थोंकी सहायतासे
कुछ संशोधन भी किया, लेकिन कुछ समाधान होने लायक सच्चे
विषयका पता न होने लगा, ~~तब उसके लिये सब पशुपतिको~~

तब मुझे उपनिषत्का एक उपदेश वचन याद में आया कि "यमेवैष
वृणुते तेन लभ्यः" वह भगवान् ही जिसको अनुग्रह करता है, उसीको
मिलने योग्य है, उसके लिये श्री पशुपतिकी प्रार्थना किया करता था।
कि मुझे तुम्हारे सच्चे रूपका पहँचान करा दो, एक दिन स्वप्नमें सन्देश
मिला कि - उत्तरमुखकी उपासना करो, और उसका मन्त्र जपो, बाद
उस साधनसे जो प्रेरणा हुई, उसके द्वारा कुछ अनुसन्धानसे "पशुपति हृदय"
नामका ग्रन्थ भी लिखा ~~~~ उसके प्रकाशनके लिये श्री ३ राजर्षि महाराज
जीके करकमलमें समर्पण किया - उसका वही सारांश आज संक्षेपसे कहता हूँ

पशुपतिका पश्चिम मुख सद्योजात है, उसका नामानुरूप भाव है,
अर्थात बालक स्वरूप है,

" सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

मैं सद्योजात रूपी शिवजी को प्राप्त करता हूं, उसको नमस्कार,
आप स्वयं पैदा न होनेवाला, और पैदा होनेवाले हर एक वस्तु में
रहनेवाला तू मेरे प्रति प्रकाशित हो, सारे जगत के पैदासमें कार-
णीभूत रुद्र को नमस्कार

उत्तर मुख वामदेव है, वह कौमार अवस्था का स्वरूप है, इतर
तीनों मुखों से यह कुछ विचित्र है, इसके बायें तरफ सिर में जटा है.
बायें कान में नाग का कुण्डल है, दाहिने तरफ सिर मे जटा से
अलग एक मुकुट है, दाहिने कान में गोल कमल का कुण्डल है, यह
अर्धनारीश्वर का स्वरूप है, उसमें भी और एक विशेषता
यह है कि - प्रायः सभी जगह पर शक्ति बांई होती है, वह यहां
पर दाहिनी है यह शक्ति का प्राधान्य बोधक रूप है.

"वामे एव देव वामदेवः" इस व्युत्पत्ति से भी वही अर्थ सिद्ध
होता है कि - जहां वाम भाग में देव हैं, अर्थात पुरुष है, वह
वामदेव है, यह गौरीशङ्कर का स्वरूप है. इसी से वामदेव का
अर्थ "सुन्दर" माना गया है.

" वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय

रहनेवाले हैं, और अति प्रकाशित हैं, सारे जगत के पैदा होने में कारणीभूत रुद्र को नमस्कार

उत्तर मुख वामदेव है, वह कौमार अवस्था का स्वरूप है, इतर तीनों मुखों से यह कुछ विचित्र है, इसके बायें तरफ सिर में जटा है. बायें कान में नाग का कुण्डल है, दाहिने तरफ सिर में जटा से अलग एक छोटा मुकुट है, दाहिने कान में गोल कमल का कुण्डल है, यह अर्धनारीश्वर का स्वरूप है, उसमें भी और एक विशेषता यह है कि— प्रायः सभी जगह पर शक्ति बांई होती है, वह यहां पर दाहिनी है यह शक्ति का प्राधान्य बोधक रूप है.

"वामे एव देव वाम देवः" इस व्युत्पत्ति से भी वही अर्थ सिद्ध होता है कि— जहां वाम भाग में देव हैं, अर्थात पुरुष है, वह वामदेव है, यह गौरीशङ्कर का स्वरूप है, इसी से वामदेव का अर्थ "सुन्दर" माना गया है.

"वामदेवाय नमो, ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो, रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो, बलविकरणाय नमो, बलाय नमो, बलप्रमथनाय नमोः सर्वभूतदमनाय नमो, मनोन्मनाय नमः"

वामदेव आदि ग्यारह नामों से, और नामानुरूप गुणों से तथा रूपों से सिद्ध एकादश रुद्रों को नमस्कार

इसके बारे में कोई कोई पण्डित लोग ऐसे कहते हैं कि— शक्ति सदा के लिये बांई बनी हुई है, उसी से वह गौण भी मानी गई है, वह दाहिनी नही हो सकती, कुण्डल किरीट आदि गहना तो राजा महाराजाओं की तरह शङ्करजी ने भी वह अलङ्कार केवल ११
शोभा के लिए धारण किया हुआ है, उसमें शक्ति का कुछ भी रूप नही, इत्यादि। लेकिन यह बात शास्त्रीय नही, क्यों कि— शङ्कर शक्ति आदि देवताओं में शरीर हात, और हात में हथियार आदि की कल्पना भी तात्त्विक मानना ही उचित है, उसी तरह अलङ्कार का भी तदनुरूप तात्त्विक भाव ही शास्त्रीय है, "जयेम तं दक्षिणया रथेन" दक्षिणावाग्द्योता" इत्यादि वेद में सुनाई गई बातें उत्तम यहां पशुपति में ही देखने मिली, इसी का मुझे हर्ष है, और [illegible] (प्रत्यक्ष)

दक्षिणमुख अघोर, यह युवावस्था का रूप है, इसके दाहिने
कान में नागकुण्डल है, बायें कान में कमल का कुण्डल, सिर में
गोल गोल बांटी हुई जटा टोपी की तरह एक ही है, यह वामा-
शक्ति के सहित रुद्र का रूप है, इसी से वह घोर और अघोर
माना गया है, रुद्र घोर है शक्ति अघोर, अर्थात शान्त है,

"अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

घोर और शान्त बने हुए अत्यन्त घोररूपी सभी रुद्रों को नमस्कार,
पूर्वमुख तत्पुरुष, वह महादेव का प्रौढ़ रूप है, देवता अजर
और अमर होने के कारण उनकी वृद्धावस्था नहीं मानी गई है,

"तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात॥

उस तत्पुरुष को हम जानते हैं, उस महादेव का ध्यान करते हैं,
वह रुद्र हमको प्रेरणा करे,
ऊर्ध्वमुख ईशान है, वह साक्षात रुद्र का नीरूपक प्रतीक है,
जैसे सब जगह पर है

"ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-
ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

सभी विद्याओं का मालक, सभी भूतों का राजा, महान
अधिपति, प्रत्यक्ष ब्रह्मरूपी वाणी का अधिपति स्वयं ब्रह्म-
रूपी शिव मुझे सदा मङ्गल करने वाला हो,

२

यह ऊर्ध्वमुख शक्तिशिवात्मक ~~माना गया~~ है, इसमें शक्ति गुप्त
रूप से है, वह तन्त्र में कामकलात्मक माना गया है, वेद में तेज और
रसरूपी अग्नीषोम, सूर्याचन्द्रमस. और सोमा रुद्र का स्वरूप
~~माना गया है~~ माने गये बताया गया है, उसमें रुद्र का तेजोमय तीक्ष्ण और
घोररूपी शरीर है, वह अग्निरूप है, शक्ति का शान्तरूपी जो रसमय
शरीर है वही सोम है.

"अग्निरित्युच्यते रौद्री घोरा या तैजसी तनुः
सोमः शाक्तोऽमृतमयः शक्तेः शान्तिकरी तनुः॥

इसी तरह विद्युत सूर्य आदि सब तेज रुद्र है, जल आदि सब रस
शक्ति है, अतः पशुपति के सिर में गुप्त रूप से सिद्ध शक्तिशिवा-
त्मकतत्व शास्त्रों से माना गया है,

सप्रेम
श्री खड्गचन्द्रवर्मा -

पद रोज

इसीलिये पशुपतिके सिरमें ~~खड~~ शक्तिदेवताके श्रीयंत्र
लिखकर पूजा करनेकी पद्धति पूर्वाचार्यपरम्परासे
चली आई है, यह पूजा श्री श्रीशङ्कराचार्यजीकी पद्धति के
अनुसार आजतक अविच्छिन्न हो रही है -
इसीलिये पशुपतिके चारमुखोंके ~~चार दाक्ष~~ पूजाके लिये
चार दाक्षिणात्य तन्त्र विद्वान् वैदिक ब्राह्मण रखे गये है -
उस पूजा आदि विनियोगमें श्री ५ महाराजा, औ धर्मा-
धिकारी राजगुरुजीओंका निरीक्षण और व्यवस्था होनेके कारण
योग्य रीति से कार्यक्रम चल रहा है।
यह पशुपति हृदय भगवानका विश्वरूपतत्त्व के प्रकाशन
करनेवाला हो।
इस ग्रन्थके भूमिकामें नेपाली भाषा प्रकाशन समितिके
अध्यक्ष श्री बालकृष्ण समशेरने लिखा है कि -
श्रीरमण महर्षिको शिष्य देवरातम् ~~...~~ को यो ग्रन्थले हाम्रो
भक्तहरूलाई श्रीपशुपतिनाथजीलाई दुई आँखांले मात्र होइन
तत्त्व खोज्ने तेस्रो आँखांले पनि दर्शन गर्न सिकायो।
तथास्तु -
दिसं तद्विश्वरूपं ——